पठान खानदान के वंशजों का सिजरा

: नागड पठान :

(चोमू राजस्थान)

सिजरा व इतिहास

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

पठानों का कदिमी इतिहास

पठानों का नसब (वंश) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के छोटे बेटे हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम से मिलता है। हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हुए, जिन्हें "इसराईल" भी कहा जाता है। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे हुए, जिनसे "बनी इसराईल" की बारह क़ौमें चलीं।

इन्हीं बेटों में से एक हज़रत बिन्यामीन अलैहिस्सलाम, जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के छोटे भाई थे, उनकी नस्ल से आगे चलकर तालूत अलैहिस्सलाम हुए — जो बनी इसराईल के पहले बादशाह थे, जिनका ज़िक्र क़ुरआन करीम में भी आता है।

अफ़ग़ान बिन इरमियाह बिन तालूत अलैहिस्सलाम

तालूत अलैहिस्सलाम की नस्ल में आगे चलकर इरमियाह और फिर उनके बेटे अफ़ग़ाना हुए। यही अफ़ग़ाना वह शख़्स माने जाते हैं जिनसे आगे “अफ़ग़ान क़ौम” की शुरुआत हुई। यही नस्ल आगे चलकर पठान या पश्तून कहलायी। इसी वजह से पठानों को “अफ़ग़ान” भी कहा जाता है।

पठानों की अफ़ग़ानिस्तान हिजरत

कुछ सदियों पश्चात् बनी इसराईल पर बाबुल के बादशाह बुख़्त नसर ने आक्रमण किया। उसने बैतुल-मक़दिस को नष्ट कर दिया और बनी इसराईल की एक बड़ी जनसंख्या को क़ैद कर इराक़ और ईरान की ओर ले गया।

इस विनाश के परिणामस्वरूप बनी इसराईल के अनेक क़बीले अपने मूल क्षेत्रों से हिजरत (प्रवासन) करके ख़ुरासान, ग़ज़नी, कंधार और काबुल की पहाड़ी इलाक़ों की ओर चले गए, जहाँ उन्होंने स्थायी बसावट शुरू की।

इन्हीं प्रवासी क़बीलों में अफ़ग़ाना की औलाद भी शामिल थी।
समय के साथ इन लोगों ने स्थानीय समाज में रचकर अपना स्वतंत्र क़बीलाई ढांचा स्थापित किया।
इनकी पहचान आगे चलकर “अफ़ग़ान” या “पठान” के नाम से जानी गई, जो बाद में अफ़ग़ानिस्तान की मूल क़ौम बनी।

ख़ैबर नाम की परंपरा

इस्लामी इतिहासकार अल-बरूनी और निज़ामुद्दीन
अहमद बख्शी के विवरणों के अनुसार,
बनी इसराईल के कुछ क़बीले अरब प्रायद्वीप की
ओर और कुछ ईरान व ख़ुरासान के इलाक़ों की
ओर
हिजरत कर गए थे।

जो क़बीले अरब में रहे, उन्होंने ख़ैबर (अरब) क्षेत्र
में अपना क़िला और बस्तियाँ स्थापित कीं,
जबकि जो समूह पूरब की दिशा में बढ़े,
उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी इलाक़ों में बसकर
अपनी नई बस्ती के लिए “ख़ैबर” नाम को
अपनाया —
संभावतः अपनी पूर्व मातृभूमि की स्मृति और
धार्मिक विरासत के प्रतीक के रूप में।

बाबा क़ैस अब्दुल रशीद

अफ़ग़ान या पश्तून क़ौम का जद्द-ए-अला (मूल पूर्वज) क़ैस अब्दुल रशीद को माना जाता है।
रिवायतों के अनुसार, उनका वंश बनी इसराईल के पहले बादशाह तालूत अलैहिस्सलाम की औलाद से जुड़ा था।
तालूत की नस्ल में आगे इरमियाह और फिर उनके बेटे अफ़ग़ाना हुए,
जिनसे अफ़ग़ान क़ौम का नाम निकला।

समय के साथ अफ़ग़ाना की औलाद ख़ुरासान और अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी इलाक़ों में बस गई।
इसी नस्ल में बाद में क़ैस का जन्म हुआ, जिन्हें आगे चलकर क़ैस अब्दुल रशीद के नाम से जाना गया।

इस्लामी रिवायतों के मुताबिक़, जब अरब में इस्लाम का नूर फैल रहा था, उस वक़्त क़ैस अब्दुर रशीद अपने क़बीले के प्रतिनिधि के तौर पर ख़ुरासान से मदीना मुनव्वरा पहुँचे। वहाँ उन्होंने हज़रत मुहम्मद ﷺ की ख़िदमत में हाज़िरी दी और ईमान कुबूल किया।

रसूल अल्लाह ﷺ ने उनकी दीनी लगन और सच्चाई देखकर उन्हें **"अब्दुर्रशीद"** का लक़ब अता फ़रमाया और उनकी नस्ल के लिए बरकत की दुआ दी।

रिवायतों में यह भी ज़िक्र मिलता है कि नबी-ए-पाक ﷺ ने उन्हें **"बुथान"** कहकर पुकारा, जो आगे चलकर **"पठान"**, **"पश्तून"** या **"पख्तून"** के नाम से मशहूर हुआ।

मदीना से लौटने के बाद क़ैस अब्दुर रशीद अपने वतन अफ़ग़ानिस्तान आए और अपने क़बीले में इस्लाम का पैग़ाम फैलाया।
उन्हीं की दावत और रहनुमाई से अफ़ग़ान इलाक़ों में इस्लाम की नींव पड़ी,
और उनकी औलाद ने सदियों तक दीनी गैरत, बहादुरी और आज़ादी की रूह को ज़िंदा रखा।

हज़रत क़ैस अब्दुल रशीद का नसब

१	हज़रत क़ैस अब्दुर रशीद
२	बिन ईसा
३	बिन तालूत
४	बिन उतबा
५	बिन नईम
६	बिन मुर्रह
७	बिन योहनदा
८	बिन फरूद
९	बिन सालेह
१०	बिन सालेम
११	बिन महलूल
१२	बिन अइन
१३	बिन रेहमान
१४	बिन सकन्दर
१५	बिन ग़ान
१६	बिन फ़हलूल
१७	बिन करम
१८	बिन अमाल
१९	बिन हुदैफ़ा
२०	बिन मिन्हा

२१	बिन क़ैश
२२	बिन तुलआल
२३	बिन ज़लीब
२४	बिन अबिजाह
२५	बिन कुमरूद
२६	बिन हारून
२७	बिन इस्माईल
२८	बिन आलिम
२९	बिन लेवी
३०	बिन आमिल
३१	बिन तारिज़
३२	बिन इलआज़र
३३	बिन मुंनदुल
३४	बिन सलीम
३५	बिन अफगाना
३६	बिन यिरमियाह
३७	बिन हज़रत
	मलक तालुत

पठान कबीलों का इतिहास

सभी पठान कबिलों की नस्ल एक ही पूर्वज — क़ैस अब्दुर रशीद से चली है।

रिवायतों के मुताबिक़, क़ैस अब्दुर रशीद के तीन बेटे हुए — सरबन, बेतान (या बतनी) और घौरघुस्ट (या गड़गश्त)।

सरबन की औलाद से यूसुफ़ज़ई, अफ़रीदी, ख़ट्टक और शिनवारी जैसे मशहूर क़बीले निकले।

बेतान की नस्ल से लोधी, सूरी, नियाज़ी और इसहाक़ज़ई बने।

घौरघुस्ट की औलाद से नागर, काकड़, पन्नी और मांडोज़ई जैसे क़बीले उभरे।

समय के साथ ये क़बीले तादाद, इलाक़े और असर में बढ़ते गए।

हर क़बीला अपने बुज़ुर्ग या सरदार के नाम से पहचाना जाने लगा, और इसी क़बीलाई नज़्म-ओ-ज़ब्त ने अफ़ग़ान समाज की बुनियाद रखी।

इन तीनों नस्लों की औलाद मिलकर उस सरज़मीन का रूप बनी जो आज “अफ़ग़ानिस्तान” के नाम से जानी जाती है — जहाँ नस्ल, इमानदारी और आज़ादी की रूह सदियों से ज़िंदा है।

घुर्गुश्त का सिजरा

क़ैस अब्दुर रशीद रज़ियल्लाहु अन्हु के तीन पुत्र हुए — सरबन, बेतान और घुर्गुश्त।

इनमें से घुर्गुश्त तीसरे पुत्र थे। वे अपने साहस, उदारता और नेतृत्व के लिए प्रसिद्ध हुए। अल्लाह तआला ने घुर्गुश्त को तीन बेटे अता फ़रमाए — दानी, बाबी और मंडो।

दानी

दानी, घुर्गुश्त का बड़ा बेटा था। वह अक़्लमंद, दूरअंदेश और बहादुर इंसान माना जाता था। कहा जाता है कि दानी ने अपने इलाक़े में इंसाफ़ और हिम्मत की ऐसी मिसाल क़ायम की कि उसकी नस्ल आज तक **"दानीज़ई"** नाम से पहचानी जाती है। बाद में दानी की संतान से कई मशहूर क़बीले पैदा हुए — जैसे काकर, नागर, दावी और पनी। इन कबीलों ने अफ़ग़ान सरज़मीन पर अपनी अलग पहचान बनाई, और सदियों तक बहादुरी, मेहमाननवाज़ी और आज़ादी की मिसाल बने रहे।

बाबी

बाबी, घुर्गुश्त का दूसरा बेटा था। उसका मिज़ाज नरम और सूफियाना बताया जाता है। कहा जाता है कि बाबी की नस्ल के लोग इल्म और दीनी तालीम के शौक़ीन थे। उनकी औलाद बाद में बाबीज़ई, हरूत और इस्लामज़ई जैसे नामों से जानी गई। बाबी की शाखा भले ही बहुत बड़ी नहीं रही, मगर अफ़ग़ान रिवायतों में उसका नाम आज भी इज़्ज़त और तअज़ीम के साथ लिया जाता है।

मंडो

मंडो, घुर्गुश्त का तीसरा बेटा था — दिलेर, आज़ाद मिज़ाज और अपने क़बीले की आन-बान। उसकी नस्ल से आगे चलकर कई ताक़तवर क़बीले निकले — जैसे मंदोखेल, अचाकज़ई, बरेच और साफ़ी। ये लोग ज़्यादातर कंधार, हेलमंद और पेशावर के इलाक़ों में बस गए। मंडो की नस्ल को अपनी आज़ादी और इज़्ज़त पर नाज़ था, और वे कभी किसी ताक़त के आगे सिर नहीं झुकाते थे।

इस तरह घुर्गुश्त की तीनों शाखाएँ — दानी, बाबी और मंडो — अफ़ग़ान नस्ल की तीन मज़बूत नींव बनीं। इनसे आगे चलकर दर्जनों क़बीले और सैकड़ों ख़ानदान पैदा हुए, जिन्होंने सदियों तक अपने ख़ून, ईमान और किरदार से अफ़ग़ान सरज़मीन को रौशन किया।

दानी की औलाद

दानी, घुर्गुश्त के बड़े बेटे और क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते थे।

वह अक़्लमंद, समझदार और बहादुर इंसान माने जाते थे। उनके जीवन में इंसाफ़, बहादुरी और दीनी शराफ़त की मिसालें बहुत प्रसिद्ध हुईं।

अल्लाह तआला ने दानी को चार बेटे अता फ़रमाए — काकर, नागर, दावी और पनी।

इन चारों बेटों की नस्लों से आगे चलकर कई अफ़ग़ान क़बीले और शाखाएँ बनीं, जिन्होंने अपनी बहादुरी, ईमानदारी और ज्ञान के कारण अफ़ग़ान सरज़मीन में अपनी पहचान बनाई।

दानी की औलाद ने जहाँ भी बसावट की, वहाँ अपने क़बीले की इज़्ज़त और अपनत्व बनाए रखा। उनकी विरासत आज भी अफ़ग़ान इतिहास में सम्मान और शान के रूप में याद की जाती है।

पठानो के सिजरे की एक तस्वीर

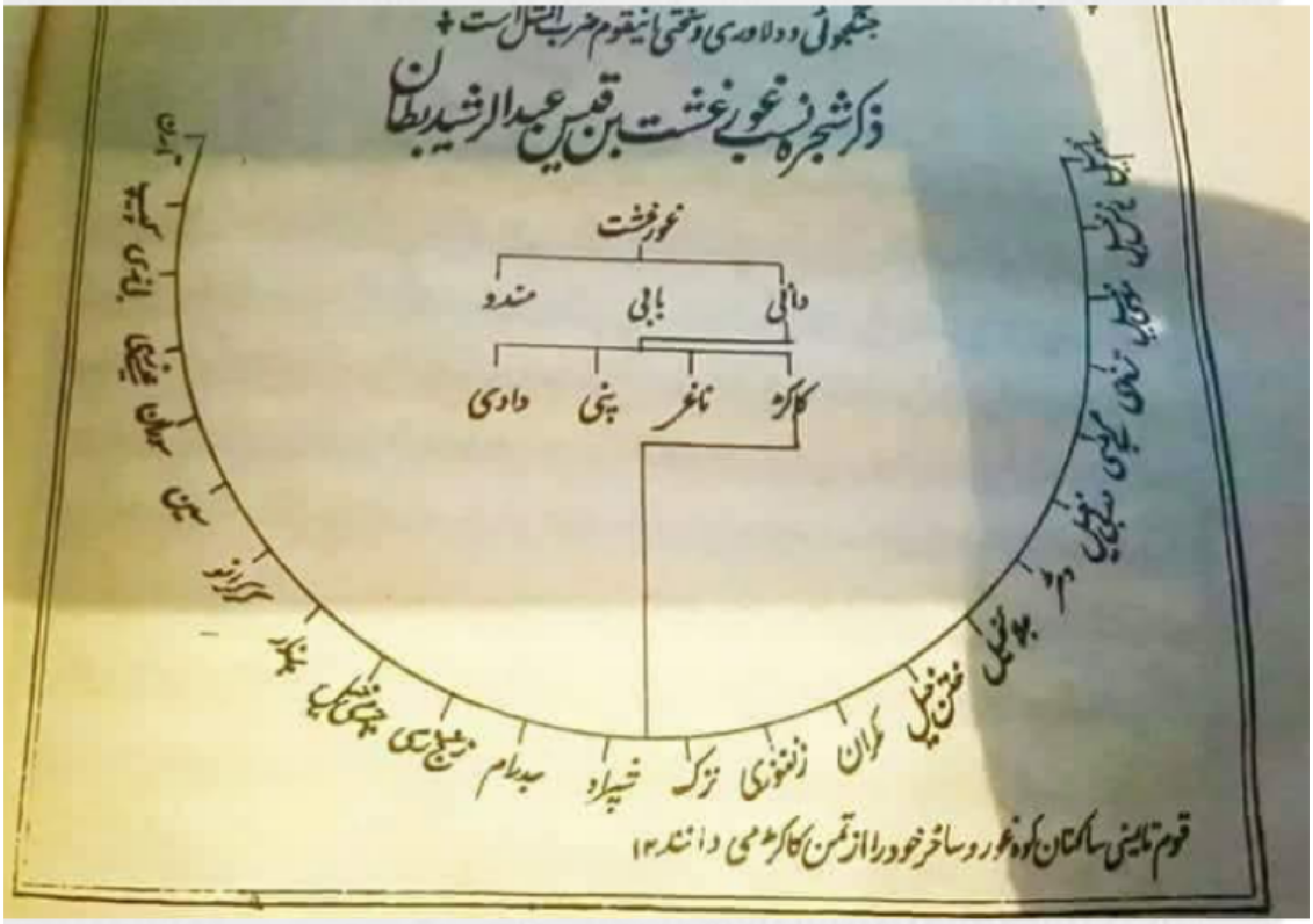

काकर

काकर, दानी के सबसे बड़े पुत्रों में से एक थे और बहादुर व इंसाफ़ पसंद इंसान के रूप में जाने जाते थे। उनकी दूरदर्शिता और साहस ने उनके क़बीले में सम्मान और शान कायम की। काकर की शाखा से आगे चलकर कई अफ़ग़ान क़बीले और उप-शाखाएँ विकसित हुईं

काकर क़बीले की प्रमुख उप-शाखाओं में अब्दुलज़ई, जलालज़ई, मूसाखेल, चमड़ीज़ई और सुलैमानखेल शामिल हैं। इन उप-शाखाओं ने समय के साथ अपने इलाक़ों में बसावट की और अपनी पहचान कायम रखी।

.काकड़ को खुदा की रहमत ने **23** बेटे अता फरमाए तोगरुक,जादराम, सबरद,ज़न्घोरी, चारमी, बिदर, कर्खारनु, फ्रमुली, खासनी,दम्मर्सिन, सहकरी, लंबर,तरेन,इसा,तरघारी, मुसाज़यी, मति,युनिसखील, साम, अर्पितखील, जलाजल, मकरानी और अनाच.

तोगरुक के **4** बेटे हुए सरन,युनिसखील, सालारखील और सोंदन जिसे संजर भी कहा जाता था .

संजर के **12** बेटे हुए अलिखील, अर्पिकखील, बारात, किवी, हरमजयी,उस्मानखील और अवदाल अन्य **5** अज्ञात है **.**अलिखील के **4** बेटे हुए **,**सोदोज्यी, मर्ज़ी, गोरीजयी, हदरजयी और राजाजयी.

सरन के बेटे अर्पिकखील के **4** पुत्र थे अतोजयी **,**मोहम्मदजयी और राजाजयी चोथे पुत्र का नाम अज्ञात है **.**

काकड के बेटे जादराम के **2** बेटे हुए अबबिकर(अबुबकर) और हुसेन.

अबुबकर के **2** बेटे थे इल्यास और संभाना.

जादराम के बेटे हुसेनी, के **4** पुत्र हुए आदम,सनम, उमर और हस्बी.

अबुबकर के बेटे सिनबना के **3** पुत्र हुए युसुफ,पनी और इसा.

सरोंन के बेटे किवी के **4** बेटे हुए हसन, यासीन, शम्शुदीन और शिमोन.

काकड के बेटे सबरद के **4** बेटे हुए शादिज्यी, अंकोजयी,फातिमजयी और अतोजयी.

काकड के बेटे जंगोजयी को अल्लाह ताला ने **8** बेटे दिए जिनके नाम शादीखील,बाजूखील, अय्यूबखील, ताजूखील, मंडीजयी,मामाखील और संक रखे गये **.**

काकड के बेटे तरन का खाता(शिजरा)

तरन सईदजादा थे उनके एक बेटा हुआ जिसे अंजर कहा जाता था अंजर के भी इकलोता पुत्र था जिसका नाम ख्वाजाकारी था.ख्वाजाकारी के **5** बेटे हुए हेकालूँन **,**अदीन, इस्माइल, तूर और इब्राहीम.

दावी की औलाद

दावी, घुर्गुश्त के पोते और दानी के पुत्र थे।
वे अक़्लमंद, दीनी और बहादुर इंसान माने जाते थे, जिन्होंने अपने दौर में इंसाफ़ और अमन की मिसाल क़ायम की।

उनकी नस्ल से **"**दावी क़बीला**"** अस्तित्व में आया — अफ़ग़ान नस्ल की एक प्राचीन और सम्मानित शाखा। दावी क़बीले के लोग अपनी बहादुरी, ईमानदारी और मेहमाननवाज़ी के लिए प्रसिद्ध रहे हैं।
इनकी अधिकतर आबादी कंधार, ग़ज़नी, क्वेटा और ज़ाबुल के इलाक़ों में पाई जाती है।दावी के **3** पुत्र हुए दमर, हमर और खोवंदी उर्फ़ खोजन्दी शेखजादे थे इनके **4** बेटे जन्मे मूसा,अली, सिकंदर और बाबिल.

समय के साथ दावी की औलाद ने कई उप-शाखाएँ बनाईं, जिन्हें **"**दावीख़ेल**"** और **"**दावीज़ई**"** के नाम से जाना जाता है।
आज भी यह क़बीला अपनी दीनी शराफ़त और अफ़ग़ान पहचान का प्रतीक माना जाता है।

पन्नी की औलाद

पन्नी, दानी के पुत्र और घुर्गुश्त के वंशज थे। वे अक़्लमंद, दीनी और ग़ैरतमंद इंसान माने जाते हैं।
उनकी नस्ल से पन्नी क़बीला पैदा हुआ — अफ़ग़ान नस्ल की एक प्राचीन और सम्मानित शाखा।
यह क़बीला अपनी ईमानदारी, बहादुरी और मेहमाननवाज़ी के लिए मशहूर है।

पन्नी लोग ज़्यादातर कंधार, ग़ज़नी, झोब, क्वेटा और सीबी के इलाक़ों में आबाद हैं।
इनकी एक प्रसिद्ध शाखा बरोज़ई ने मुग़ल और दरानी दौर में इलाक़ाई हुकूमत और समाज में अहम किरदार निभाया।

आज भी पन्नी क़बीला अपनी दीनी शराफ़त, पश्तूनवाली उसूलों और अफ़ग़ान पहचान का प्रतीक माना जाता है।

अल्लाह तआला ने पन्नी को अठारह पुत्रों से नवाज़ा —
मूसा, संका, असोत, मुरग़जानी, उमरजयी, ज़दुन, साबी, शोन, अलीख़ील, मंदोख़ील, मुरग़असतन, दहपाल, बुसी, क़ासिम, कतरक, लोन, खतनी और खबती।

पन्नी के बेटे शोन के दो बेटे हुए — उस्मानख़ील और शादाबख़ील।
दहपाल के पाँच बेटे हुए — मुमिज़ई, मरदुख़ील, उमरज़ई, मुल्ख़ीज़ई और अबूबकरज़ई।

नागर की औलाद

दानी, जो ग़रग़श्त बिन क़ैस अब्दुर्रशीद के सुपुत्र थे, उनकी औलाद में कई शाखाएँ पैदा हुईं।
उन्हीं में एक नाम था नागर, जो अपनी अक़्लमंदी, दीनी ज़िंदगी और ग़ैरतमंदी के लिए मशहूर थे।
इन्हीं की नस्ल से नागड क़बीला अस्तित्व में आया — जो अफ़ग़ान नस्ल की उन प्राचीन शाखाओं में से है जिन्होंने सदियों तक अपनी पहचान, इज़्ज़त और तहज़ीब को ज़िन्दा रखा।

नागड का मतलब ही है — **"**बाघ की तरह लड़ने वाला**",** और वाक़ई नागड लोग अपनी शुजाअत **(**बहादुरी**),** सब्र और जफ़ाकशी के लिए मशहूर रहे हैं।
हालाँकि इनकी तादाद ज़्यादा नहीं रही, मगर जो भी जहाँ रहा — वह अपनी बहादुरी और अमलदारी की मिसाल बन गया।

नागड क़बीले के लोग शुरूआती दौर में ख़ुरासान और कंधार की पहाड़ियों में बसे,
फिर उनकी आबादी ग़ज़नी, झोब, लोरलाई, ज़ाबुल और क्वेटा तक फैल गई।
वक़्त के साथ कुछ शाखाएँ हिंदुस्तान के इलाक़ों — ख़ास तौर पर राजस्थान, सिंध और पंजाब की सरहदों तक पहुँचीं।

जहाँ उन्होंने न सिर्फ़ बसावट की बल्कि अफ़ग़ान तहज़ीब, सूफ़ियाना मिज़ाज
और पश्तूनवाली के उसूलों — यानी इज़्ज़त, वफ़ादारी और मेहमाननवाज़ी — को भी ज़िन्दा रखा।

इतिहास गवाह है कि नागड लोग ग़ैरतमंद, दीनी और सुलह पसंद रहे, मगर जब वक़्त ने पुकारा, तो उन्होंने बाघ की तरह मैदान में उतर कर अपने क़ौम और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में कोई कसर नहीं छोड़ी।

आज भी नागड नाम एक पुराने, ख़ालिस अफ़ग़ान ख़ून की निशानी माना जाता है —
जो ग़रग़श्त बिन क़ैस अब्दुर्रशीद की उस पवित्र नस्ल से जुड़ा हुआ है, जिसने इस्लामी शराफ़त और अफ़ग़ान वक़ार को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुँचाया।

नाग़र को अल्लाह पाक ने **6** बेटों से नवाज़ा नागर के दो प्रमुख पुत्र कहे जाते हैं यूनुस खान और दमस खान।
यूनुस खान – नागर का पुत्र। यूनुस की संतान में प्रमुख हैं पलकथ, मियाँ ख़ाज़ो **(**एक पाक-संत**),** मारू तथा चंद्रो। **(**स्रोतों में अन्य दो पुत्रों के नाम नहीं मिले हैं।**)**
दमस खान– नागर का पुत्र। दमस की संतान में प्रमुख हैं पहरंद, तारक, रंडक, सलाईच और अब्दुल रहमान।

नागड पठानों का इतिहास

नागड क़बीला कभी बहुत बड़ी संख्या में नहीं रहा — अपने उत्कर्ष काल में भी इनकी कुल आबादी लगभग दस हज़ार ख़ानदानों के आसपास मानी जाती है।
इनका इलाक़ा निगाहा या सख़ी सरवार दर्रे से लेकर दक्षिण की ओर कोह-ए-सियाह (सुलेमान पर्वत श्रृंखला) के दक्षिणी हिस्सों तक फैला हुआ था,
जहाँ यह पर्वत श्रृंखला पश्चिम की ओर मुड़कर कोह-ए-सुरख़ (लाल पहाड़ियों) की नीची श्रेणियों में मिल जाती है।

नागड क़बीले के पश्चिम और उत्तर में क्रमशः कंसी खितरान और मियाना क़बीले बसे थे,
दक्षिण में कच्छी और सिंधु घाटी के मैदान थे,
जबकि पूर्व में मुल्तान ज़िले के पंजनद इलाक़े और वे पहाड़ी क्षेत्र थे जो अब बुज़दार, कसरानी, खोसा, लेघारी, लशारी, बुगती और मझारी बलोचों के क़ब्ज़े में हैं।

अपने उत्कर्ष काल में नागड क़बीले का प्रभाव पूर्व और दक्षिण दोनों दिशाओं में बढ़कर सिंधु घाटी तक जा पहुँचा था।
ऐतिहासिक उल्लेखों के अनुसार, उन्होंने एक समय हैरंड, सिवी, सीतपुर और कंधकोट जैसे क्षेत्रों पर भी शासन किया था।

नागड लोग पन्नी क़बीले से पहले ही बलोचिस्तान के कुछ मैदानों में स्थापित हो चुके थे।

नागड पठानों की भारत हिजरत

भूलोल लोधी का ख़ानदान ख़ुरासान और अफ़ग़ानिस्तान से ताल्लुक़ रखता था।

सैय्यद वंश के दौर **(1414–1451 ई.)** में जब दिल्ली सल्तनत कमज़ोर हो रही थी, तब पंजाब और सरहद के इलाक़ों में अफ़ग़ान सरदारों का प्रभाव बढ़ा — उन्हीं में भूलोल लोधी भी थे।

उन्होंने मुल्तान और सरहिंद के दरमियान अपनी ताक़त क़ायम की और **1451** ईस्वी में दिल्ली की गद्दी संभालकर लोधी वंश की स्थापना की थी।

नागड पठान क़बीला, जिन्होंने पहले ही कोह-ए-सुलेमान की घाटियों से लेकर बलोचिस्तान, सिंध और मुल्तान तक अपना असर और रसूख़ क़ायम कर लिया था, उस दौर के सबसे बहादुर और संगठित अफ़ग़ान क़बीलों में गिना जाता था। उनकी जंगजू फितरत, ईमानदारी और इलाक़े पर मज़बूत पकड़ ने उन्हें दूसरों से अलग पहचान दी थी।

नागड लोग केवल योद्धा ही नहीं थे, बल्कि कुशल घोड़े पालक और व्यापारी भी थे — घोड़ों की परवरिश और व्यापार उनकी पुरानी पठान रिवायतों का अहम हिस्सा था। घोड़े उनके लिए रोज़गार के साथ-साथ शान और विरासत का प्रतीक माने जाते थे।

उनकी बहादुरी और क़ाबिलियत देखकर बहलोल लोधी ने नागड पठानों को अपना विश्वसनीय साथी बना लिया। यही वह समय था जब नागड क़बीले के लिए हिंदुस्तान के दरवाज़े खुले — और उन्होंने यहाँ अपनी बहादुरी, अनुशासन और अफ़ग़ान रिवायतों की पहचान स्थापित की।

बहलोल लोधी ने नागड पठानों की बहादुरी और वफ़ादारी को देखते हुए उन्हें सल्तनत के विस्तार और सरहदी इलाक़ों की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी सौंपी।
इससे उनका रसूख़ और ताक़त और भी बढ़ गई, और वे अफ़ग़ान सल्तनत के अहम सिपहसालार बन गए।

वक़्त के साथ नागड पठान पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर भारत के कई इलाक़ों में बस गए।

दादा इस्माईल खान दिलेर जंग
(खानदान का इतिहास)

उन्हीं अफ़ग़ान सरदारों में से एक दादा इस्माइल ख़ान दिलेर जंग थे, जो बहलोल लोधी के निमंत्रण पर अपने नागड पठान क़बीले के साथ अफ़ग़ानिस्तान से हिंदुस्तान आए।

हिंदुस्तान पहुंचने के बाद इस्माइल ख़ान ने बहुत कम समय में अपनी जंगी क़ाबिलियत, बहादुरी और रणनीतिक दूरदर्शिता से पहचान बना ली। उन्होंने बिहार और वर्तमान उत्तर प्रदेश के कई महत्वपूर्ण इलाक़ों को फतह किया, जिससे उनकी स्थिति बहलोल लोधी के विश्वसनीय सेनापति के रूप में मज़बूत हुई।

उनकी युद्ध–सफलताओं और निष्ठा से प्रभावित होकर बहलोल लोधी ने उन्हें बिहार का सूबेदार नियुक्त किया। इस पद पर रहते हुए इस्माइल ख़ान ने न केवल प्रशासन को स्थिर किया बल्कि अफ़ग़ान शक्तियों को भी संगठित कर क्षेत्र में लोधी शासन की पकड़ मजबूत की।

बिहार में प्रभाव स्थापित करने के बाद इस्माइल ख़ान दिलेर जंग उत्तर भारत की ओर बढ़े। उस समय राजस्थान में स्थित नरहर और बगर पर जोध चौहान राजपूतों का शासन था।
इस्माइल ख़ान ने अपने नागड पठान लश्कर के साथ निर्णायक युद्ध में चौहानों को परास्त किया और नरहर पर अधिकार स्थापित किया। यह विजय आगे चलकर इस क्षेत्र में पठानी सल्तनत की बुनियाद साबित हुई।

इतिहासकार पंडित झाबरमल शर्मा भी उल्लेख करते हैं कि फतेहपुर और झुंझुनू की नवाबियों के दौर के साथ-साथ ही नागड पठानों ने नरहर में अपनी नवाबियत स्थापित की।
सन् **1446 (**संवत **1503)** में इस्माइल ख़ान दिलेर जंग के नेतृत्व में आया यह नागड पठान दल बाद के वर्षों में अपनी बहादुरी, शासन–कौशल और स्थायी प्रभाव के लिए पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया। और यही इस्माइल ख़ान दिलेर जंग आगे चलकर चोमू के नागड पठानों की नस्ल के **“**जद-ए-आला**” (**मुख्य पूर्वज**)** माने गए — जिनसे चोमू के नागड पठानों की वंश–परंपरा प्रारंभ होती है।

चोमू के नागड पठानों की नवाबी

इस्माईल खान दिलेर जंग के बेटे नवाब दादा मलिक दिलावर ख़ान नागड ने **1455** ईस्वी (संवत **1512)** में हज़रत हाजी शकरगाह की दरगाह का निर्माण कराया, जो आगे चलकर नागर पठानों की सरपरस्ती, आस्था और क्षेत्रीय प्रभाव का एक अहम निशान बन गई। अन्य नागड पठान नवाबों के नाम:

- नवाब अलाउद्दीन खान नागड
- नवाब क़ासिम खान नागड
- नवाब हुसैन खान नागड
- नवाब बल्लन खान नागड
- नवाब दीवान क़ुतुब खान नागड
- आखिरी नवाब अब्दुल्ला खान नागड

नागड़ पठानों की नवाबी तक़रीबन तीन सदियों तक इस पूरे इलाक़े में क़ायम रही। अपने दौर-ए-हुकूमत में उन्होंने कई अहम इमारात, मस्जिदें, मक़बरे, सरायें, रास्ते और पानी के स्रोत तामीर करवाए, जिन्होंने बगड़–नरहर क्षेत्र की तारीख़ी और सामाजिक शक्ल को हमेशा के लिए बदल दिया।

नागड़ पठानों का असर-ओ-रसूख़ मुख्यतः बगड़–नरहर बेल्ट और उसके आसपास के इन इलाक़ों में था:

- नरहर
- बगड़
- जय पहाड़ी
- इस्लामपुर
- सुलताना
- बदनगढ़
- तथा नज़दीकी गाँव और कस्बे

कई पुश्तों तक इन अफ़ग़ान नवाबों ने इस पूरी पट्टी में अमान, नज़्म-ओ-नस्फ़ और प्रशासनिक स्थिरता को मज़बूती से क़ायम रखा।

आज भी नागड़ पठानों की औलाद बगड़, जय पहाड़ी, इस्लामपुर और आसपास के अन्य इलाक़ों में आबाद है, जहाँ उनके ख़ानदानी मक़बरे और नवाबी दौर की कई तामीरात अब भी हमारी शान और तारीख़ की गवाही देती हैं।

मशहूर सूफ़ी बुज़ुर्ग हज़रत हाजीब शक्कबर बाबा की दरगाह का निर्माण नरहर के नवाब, दादा-ए-आला मलिक दिलावर ख़ान द्वारा करवाया गया था। यह दरगाह उनकी रूहानी अकीदत, सदभावना और ख़िदमत-ए-ख़ल्क़ के जज़्बे का प्रतीक मानी जाती है।

नेहराओं , राजपूत और नागड़ पठान नवाबों के बीच संघर्ष (16वीं–17वीं शताब्दी)

16वीं शताब्दी के अंतिम दौर और **17**वीं शताब्दी के आरंभ में नेहरा जाट–राजपूत सरदारों और नागड़ पठान नवाबों के बीच अनेक निर्णायक संघर्ष हुए। अधिकांश मुठभेड़ों में नागड़ पठान पक्ष विजयी रहा।

जिसके परिणामस्वरूप पराजित नेहरा सरदार विशेष अवसरों पर नागड़ नवाबों के दरबार में उपस्थित होकर माफ़ी मांगते और नज़राना/भेंट प्रस्तुत करते थे। इन्हीं नियमित भेंटों के कारण इतिहास में नेहरा सरदारों को 'शाही भेंटवाल' के नाम से भी जाना गया।

बगड़–नरहर क्षेत्र में नागड़ पठान नवाबों का विस्तार

नवाब क़ासिम ख़ान के बाद बगड़ की नवाबियत नवाब हुसैन ख़ान को मिली। उनके वंशज बगड़ तथा नूनिया गोत्र के कुछ इलाक़ों में बस गए।
हुसैन ख़ान के छोटे भाई सिकंदर ख़ान ने खुदाना क्षेत्र में अपना निवास स्थापित किया, जबकि दूसरे भाई बहलोल ख़ान ने इस्लामपुर कस्बे की बुनियाद रखी।

बहलोल ख़ान के बेटे जलाल ख़ान ने इस्लामपुर में एक प्रसिद्ध कुआँ तामीर कराया, जिसे आज भी "जलाल ख़ान का कुआँ" के नाम से जाना जाता है।

बगड़–नरहर क्षेत्र में नागड़ पठान नवाबों का विस्तार

नरहड़ के नागड़ पठान नवाबों ने शार्दूल सिंह शेखावत को दी गई जागीर का कड़ा विरोध किया। इसी दौर में नेहरा सरदार जुझार सिंह नेहरा **(1664–1730)** इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में उभरे।

उनके पिता नवाबों के फौजदार थे, लेकिन समय के साथ जुझार सिंह का झुकाव नागड़ नवाबों के विरोध में बढ़ा।

शार्दूल सिंह शेखावत ने जुझार सिंह से संपर्क किया, और जुझार सिंह के माध्यम से जाट सरदार, तथा शार्दूल सिंह के माध्यम से राजपूत सरदार, इस समझौते पर राज़ी हुए कि—

“मुस्लिम नवाबों के विरुद्ध संयुक्त रूप से युद्ध किया जाएगा; और विजय की स्थिति में जुझार सिंह को सरदार की उपाधि दी जाएगी।

निर्णायक युद्ध — **1730** ईस्वी

रणनीतिक अवसर की तलाश में जुझार सिंह नेहरा ने अपने साथी सरदारों के साथ मिलकर झुंझुनू के कायम खानी और नरहड़ के नागड़ पठान नवाबों पर अचानक क़ायराना हमला कर दिया।

शनिवार, अगहन सुदी **8,** संवत **1787** **(1730** ई.**)** को हुए इस युद्ध में:

नवाब सादुल्ला ख़ान कायम खानी **(**झुंझुनू**)**

तथा नागड़ पठान नवाब अब्दुल्ला ख़ान **(**नरहड़**)**

दोनों की सेना को जुझार सिंह की चालाकी की वजह से परास्त हुईं।

इस विजय के बाद जुझार सिंह नेहरा ने झुंझुनू शहर पर अधिकार स्थापित किया, और शेखावाटी क्षेत्र में शक्ति-संतुलन पूरी तरह बदल गया।

खानदान की चोमू हिजरत

इस शिकस्त के बाद नागड़ पठानों के कई सरदार अपने क़बीलों के साथ हिजरत करके चोमू–सामोद क्षेत्र में आ बसे।

पुस्तक नाथावतो का इतिहास के अनुसार चौमू के आरंभिक बसावटों में **63** पठान परिवार शामिल थे। उन्हें शहर के पूर्वोत्तर भाग में बसाया गया था, जहाँ से सुरक्षा और संचार व्यवस्था पर प्रभावी निगरानी होती थी। इससे स्पष्ट होता है कि चौमू के सामाजिक ढांचे में भी पठानों की विशेष व प्रतिष्ठित भूमिका थी।

पंडित हनुमान शर्मा ने लगभग **1796** ईस्वी के प्रमुख पठान सरदारों —

दाउद ख़ान, बहादुर ख़ान और साहिब ख़ान

—

का भी अपनी पुस्तक में सम्मानपूर्वक उल्लेख किया है।

जहां आज भी चौमू पठानों के मोहल्ले में लगभग **2500** से अधिक पठान निवास करते हैं जिनमें मुख्यतः नागड़, सरवानी,अलीजई, काकड़, मसवानी,सुलेमानजई, युसूफजई पठान कबीले आबाद हैं।

पठान कबीले के परिवार जब चौमू आए, तो तत्कालीन चौमू राजवंश ने उन्हें अपने यहाँ शरण दी। कुछ ही समय में पठानों ने अपनी वीरता और बहादुरी के बल पर चौमू में अपनी मज़बूत पहचान और प्रभाव स्थापित कर लिया। उनकी इस क्षमता और पराक्रम से प्रभावित होकर चौमू, सामोद और जयपुर के राजवंशों ने नरहर और बगर से आए इन पठानों को अपनी सेना में शामिल कर लिया। मियाँ विलायत ख़ान — जो चौमू के पठानों में एक सम्मानित और प्रभावशाली हस्ती माने जाते हैं — ठाकुर जोधसिंह के दौर-ए-हुकूमत में चौमू के प्रमुख कामदार रहे। अपनी सेवाओं, निष्ठा और बहादुरी की बदौलत उन्हें जयपुर रियासत की ओर से जागीर प्रदान की गई।

पुस्तक नाथावतो का इतिहास
चोमू के पठानों का उल्लेख

उनको भरवाए। पीहाला दरवाजा की ओर के एकमात्र बाजार को संकुचित मान कर शहर के प्रधान भागों में कई बाजार नियत किए। पीहाला दरवाजा से बावड़ी दरवाजा होते हुए शेखावाटी आदि देशों के राहगीरों की रक्षा के लिए शहर के पूर्वोत्तर प्रान्त में मीयो पठान और राजवर के क्षत्रियों को बसाए। होली दरवाजा होकर पश्चिम दिशा के गाँवों के व्यवसायी वर्ग का आवागमन अधिक मान कर उस प्रांत में नाई, धोबी, भड़भूँजे, मणियार, माली, कोली, चमार, तेली, नायक और महतरों आदि को आबाद किया। रावण दरवाजा होकर दक्षिण देश के सज्जन दुर्जन सभी लोग आते थे अतः उस जिले में न्यारे, नागोरी, सोरगर, रैबारी और लुहार आदि को स्थानापन्न किये और शहर के प्रधान खण्डों में पुरोहितों के बास, सुखमारियों के बास, खाती, सुनार और नाइयों के बास कायम करके धर्मानुष्ठादि में सुविधा मिलती रहने के विचार से सब के मध्य में 'ब्रह्मपुरी' नाम के प्रांत में तामड़ायतों को स्थान दिया। इस प्रकार वर्तमान सद्व्यवस्थ चौमूँ का स्वतः सुचारू स्वरूप होता रहने का श्रीगणेश कृष्णसिंहजी ने ही किया था और हाथियों के ठान के भुवाभिमुख दरवाजे को बदल कर गणेशजी के नीचे का दरवाजा उन्होंने ही बनवाया था। इस प्रकार की सुविधा जनक अदला बदली करने के अनंतर संवत् १८६६-७४ में कृष्णसिंहजी ने चौमूँ से पश्चिम में १२ कोस पर रैवाल के समीप के खारड़े में "कृष्णगढ़" बसाया। यह छोटा किन्तु व्यवसाय प्रसिद्ध सुन्दर शहर सिर्फ ६० बीघा के विस्तार में है इसमें बीच का बाजार चौपड़ का है उसमें धनीमानी तथा नेमीधर्मी व्यापारी व्यापार करते हैं और शहर के चारों ओर परकोटा भी है। आरंभ की अवस्था में (संवत् १८६६-७६) में वहाँ नमक के व्यापार का बाहुल्य होने से उसकी चुंगी से चौमूँ को अधिक लाभ था। अब वह व्यापार उठ गया। चौमूँ से इतनी दूर पर ऐसे शहर के आबाद करने का मुख्य कारण व्यवसाय था। इसके सिवा एक गौण कारण यह भी था कि 'संवत १८६७ में चौमूँ के समीप से कौंजर जाति की एक नवयुवती वहाँ चली गई थी उसको उधर के अधिवासियों ने जबर्दस्ती रख ली और वापिस लाने

किन्तु उसके स्वागत आदि में सरकार के सिवा बस्ती का भी सहयोग रहा था। उसमें प्रत्येक जाति के प्रत्येक घर से गेहाधीश की हैसियत के अनुसार ३) से ५) रु. तक दिया था और असमर्थ मनुष्यों से सिर्फ १०-१० सेर अन्न लिया गया था। तोप तथा फिरंगी की बाढ़ के कागज़ों से आभासित होता है कि उन दिनों चौमूँ में ब्राह्मणों के १२२, क्षत्रियों के ३३, वैश्यों के १६०, सन्त महन्त या पुजारियों के १३, मालियों के ५२, जाटों के ३४, बागड़ों के २१, अहीरों के ४३, पठानों के ६१, खातियों के २४, कुम्हारों के ३३, चारणों के ६, भड़भूजियों के ४, छीपों के ७, नीलगरों के ४, मणियारों के ५, सुनारों के ७, तेलियों के १८, कलालों के ४, खवास या धाभाइयों के २३, दर्जियों के ८, नाइयों के २४, जोगियों के १४, मीणों के ३, लुहारों के ७, सुथारियों के ४०, स्वामियों के १२, मोचियों के १०, खटीकों के ८, रैगरों के १५, रेजी बनाने वाले जुलाहों के २१ और अहेड़ी अर्थात् शिकारियों के १३ घर या थाँभे थे। इस सूची से सूचित हो सकता है कि उन दिनों चौमूँ में कितने प्रकार के पेशा करने वाले थे और कितनी जातियों का किस प्रकार जीवन निर्वाह या पालन पोषण होरहा था। उन दिनों हर एक घर या थांभे में कम से कम २ स्त्री पुरुष और ज्यादा से ज़्यादा ४० मनुष्यों तक एकत्र रहते थे और इस प्रकार रहने में ही सब प्रकार की सुविधा अनुकूलता और सुख था।

(१२) "पुराने कागज़" (नं. ५२६) में लिखा है कि 'संवत १८७४ के आसोज में जयपुर राज्य की ओर से अलवर के अंतर्गत 'गढ़ी' पर चढ़ाई की गई थी। तन्निमित्त फौजें इकट्ठी करने के लिए कृष्णसिंहजी ने अनेक जगह अपने नाम के रुक्के भेजे थे। गढ़ीवालों का क्या कसूर था इसका कोई पता नहीं मिला परंतु बहीखाते आदि से यह अवश्य जाना गया है कि चढ़ाई के समय कृष्णसिंहजी के साथ में ६ पल्टन और ४ तोप गई थीं और उन्होंने गढ़ी का घड़ी भर में विध्वंश किया था।

(१३) "अधिकार लाभ (पृ. २१) से आभासित होता है कि संवत् १८७४ में इस देश में अंग्रेजी फौजों

चौमू के पठान — चौमू राज्य की सुरक्षा और प्रशासन की मज़बूत नींव

चौमू के पठानों का चौमू ठिकाने के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। राजस्थान के इतिहासकार पंडित हनुमान शर्मा ने अपनी **1936** ईस्वी की पुस्तक नाथावतो का इतिहास में स्पष्ट लिखा है कि चौमू की स्थापना के बाद से ही पठानों ने चौमू की रक्षा, शासन और प्रशासन में अग्रणी भूमिका निभाई।

चार दरवाजों वाला चौमू — और उनमें पठानों की जिम्मेदारी

चौमू का प्राचीन नाम **"चौ मुंहा"** था, क्योंकि यहाँ प्रवेश के लिए चार विशाल द्वार थे। इस चारदीवारी की सुरक्षा चौमू राजघराने ने अपने सबसे विश्वासपात्र और बहादुर योद्धाओं—पठानों—को सौंप रखी थी।

इनमें विशेष रूप से पी वाला दरवाजा **(**दुर्गापोल**)** पूरी तरह पठानों की निगरानी में था।

1811 ईस्वी का समरू बेगम का हमला — पठानों की निर्णायक वीरता

सन **1811** ईस्वी में जब समरू बेगम ने चौमू पर हमला किया, तब उनकी सेना ने पी वाले दरवाजे से शहर में प्रवेश का प्रयास किया। उस समय वह द्वार केवल कांटों की बाड़ और फाटक से सुरक्षित था, परंतु वहाँ तैनात पठान पहरेदारों ने अद्भुत साहस दिखाते हुए आक्रमणकारियों को रोका और कई दुश्मन सैनिकों को रणभूमि में ढेर कर दिया।

इतिहास में यह घटना चौमू के पठानों की वीरता के सबसे चमकदार उदाहरणों में से एक मानी जाती है।

रज़ा बहादुर का घेरा — पठानों की अडिग निष्ठा

उसी वर्ष रज़ा बहादुर ने चौमू पर **15** दिनों तक तोपों से लगातार हमला किया, परंतु चौमू के ठाकुर किशन सिंह जी और उनके साथ खड़े पठान सरदारों ने प्रबल प्रतिरोध करते हुए इस हमले को भी पूरी तरह विफल कर दिया।

इन घटनाओं से सिद्ध होता है कि चौमू की सुरक्षा में पठान योद्धा राज्य की ढाल थे।

खानदान के बुजुर्ग

चौमू के नागड़ पठानों में कई ऐसे सम्मानित बुज़ुर्ग हुए हैं, जिन्होंने अपने- अपने वक़्त में खूब नाम, इज़्ज़त और पहचान हासिल की। इनमें दादा करम ख़ान, दादा शेर ख़ान, दादा उमरदराज़ ख़ान, दादा साहब खान,दादा तालू ख़ान, दादा बहलोल ख़ान दाना, दादा नसीब ख़ान, दादा अख़्तियार ख़ान और आज के दौर में दादा जी शब्बीर मोहम्मद ख़ान का नाम ख़ास तौर पर लिया जाता है।

दादा करम ख़ान

मशहूर पठान सरदार दादा करम ख़ान साहब चौमू दरबार के तोपखाने के प्रभारी थे।
इन्हीं के कार्यकाल में नागड़ पठानों की ऐतिहासिक हवेली का निर्माण कराया गया था।
दादा करम ख़ान साहब अपनी वीरता, बहादुरी और अदम्य नेतृत्व क्षमता के कारण प्रसिद्ध थे। वे चौमू के दरबार के विश्वसनीय और भरोसेमंद सेनानायक माने जाते थे।

दादा शेर ख़ान जी की शहादत — पाटन के युद्ध की अमर कहानी

पाटन का युद्ध **20** जून **1790** को पाटन के बड़े मैदान में मराठों और राजपूत शासकों के बीच लड़ा गया एक बहुत ही महत्वपूर्ण युद्ध था। इस युद्ध में अफ़ग़ान नेता मिर्ज़ा इस्माइल बेग पठान राजपूतों की ओर से लड़ते हुए आगे की पंक्ति में थे। चौमू के ठाकुर लगभग पाँच हज़ार सिपाहियों के साथ पाटन पहुँचे, और उनके साथ बड़ी संख्या में बहादुर पठान लड़ाके भी इस ऐतिहासिक जंग में शामिल हुए।

इन्हीं बहादुरों में से एक थे दादा शेर ख़ान जी, जो सिर्फ़ **17** साल की उम्र में रणभूमि में उतरे। उनकी हिम्मत, तेजी और लड़ाकू स्वभाव ने युद्ध के मैदान में ऐसा असर डाला कि दुश्मन सेना भी डर गई।
उनकी वीरता के बारे में कहा जाता है कि वे एक सच्चे शूरवीर पठान योद्धा थे। जब उनकी तलवार चलती थी, तो मराठा सैनिकों की पंक्तियाँ जैसे दो हिस्सों में बंट जाती थीं।

कहानी के अनुसार, दादा शेर ख़ान जी ने अकेले ही मराठों के कई सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। उनकी तलवारबाज़ी और दिलेरी इतनी शानदार थी कि मराठा सैनिक उनके सामने आने से भी डरने लगे।
जब दुश्मन सेना उनसे सामने से लड़ने में नाकाम हो गई, तो मराठा सिपहसालार ने उनके ख़िलाफ़ चाल चली।
उन्हें घेराबंदी में फँसाया गया और पीछे से कायराना वार कर रोज़े की हालत में उनका सिर उनके धड़ से अलग कर दिया गया।

लेकिन उनकी बहादुरी की सबसे बड़ी बात यह थी कि सिर कट जाने के बाद भी दादा शेर ख़ान जी का शरीर तलवार चलाता रहा, और इस दौरान उन्होंने कई मराठाओं को मौत के घाट उतार दिया।
यह नज़ारा इतना अद्भुत और डर पैदा करने वाला था कि मराठा सेना में हड़कंप मच गया और उनकी पंक्तियाँ बिगड़ गईं।

दादा साहब ख़ान

दादा साहब ख़ान, दादा मेहराब ख़ान के सुपुत्र, चौमू के प्रतिष्ठित नागड़ पठान सरदार थे। वे चौमू ठिकाने के दरबार में महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान करते थे और अपनी निष्ठा, शौर्य तथा प्रशासनिक कुशलता के लिए अत्यंत सम्मानित माने जाते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार पंडित हनुमान शर्मा ने भी अपनी सुप्रसिद्ध कृति “नाथवाठों का इतिहास” में दादा साहब ख़ान नागड़ पठान सरदार का आदरपूर्वक उल्लेख किया है, जिसमें उनके सामाजिक प्रभाव, बहादुरी और चौमू दरबार में निभाई गई भूमिकाओं को विशेष स्थान प्रदान किया गया है।

दादा उमरदराज खान जी

दादा करम खान जी के पुत्र उमरदराज खान अपने पिता की तरह बहादुर थे। वे चौमू दरबार की सेना के कप्तान के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा और कुशलता के साथ निभाते थे। उनका नेतृत्व और युद्ध कौशल दरबार और इलाके में सम्मानित था।

दादा तालू खान जी

दादा तालू खान जी चौमू दरबार के फौजदार थे। दादा जी अपनी हवेली के चबूतरों पर वे दरबार लगाकर फौजदारी मामलों में न्याय करते थे। उनकी न्यायप्रियता और प्रशासनिक दक्षता ने चौमू के शासन और सुरक्षा ढांचे को मजबूती प्रदान की।

हज़रत दादा बहलोल खान दाना

हज़रत दादा बहलोल खान दाना साहब एक सूफी दरवेश, स्वतंत्रता सेनानी और अपने दौर के निडर पठान सरदार थे। उन्होंने अपने भाई दादा जंग बहादुर खान के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और चौमू व आसपास के क्षेत्रों में इस्लाम की शिक्षाओं तथा मानवता के पैग़ाम को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दादा बहलोल खान दाना साहब ने चौमू के पठानों को एकजुट करने और सामाजिक उत्थान के उद्देश्य से "जमाअत-ए-अफ़ग़ानिया चौमू" की स्थापना की, जो उस समय पठान समाज की सबसे संगठित और प्रभावशाली जमाअत मानी जाती थी। इस जमाअत के माध्यम से उन्होंने अंग्रेज़ों के अन्याय और अत्याचार का खुलकर विरोध किया और लोगों को एकता, हिम्मत और मज़हबी भाईचारे का रास्ता दिखाया।

दादा बहलोल खान दाना साहब सिर्फ चौमू तक सीमित शख्सियत नहीं थे, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी एक सम्मानित नाम थे। उनकी सादगी, ईमानदारी और दूरदर्शी विचारों से प्रभावित होकर महात्मा गांधी और खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान **(**फ्रंटियर गांधी**)** जैसी महान हस्तियों ने उनसे पत्राचार किया और उनके अनुभवों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

जब हज़रत दादा बहलोल खान दाना साहब का इंतिक़ाल हुआ, तो उनके जनाज़े में उस समय के राजस्थान के मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर साहब सहित कई राष्ट्रीय, प्रांतीय और स्थानीय प्रतिष्ठित हस्तियों ने शिरकत की और उन्हें ख़िराज-ए-अक़ीदत पेश किया।

दादा बहलोल खान दाना साहब की शख्सियत, उनका सूफीयाना मिज़ाज **,**उनकी नेकदिली और उनकी पठानी वीरता आज भी चौमू और पूरे पठान समाज के लिए फ़ख़्र और प्रेरणा का उज्ज्वल स्रोत मानी जाती है।

दादा तालू खान के वंशज

दादा तालू खान के पुत्र दादा नसीब खान चौमू दरबार में दरोगा के पद पर थे और अपने समय में ईमानदारी, न्यायप्रियता और निष्ठा के लिए मशहूर रहे। दादा नसीब खान जी के पुत्र दादा महबूब खान और दादा आलमशेर खान, तथा उनके पोते दादा हाजी करम खान, दादा शमशीर खान, दादा अल्लाहबेली खान, दादा मेहराब खान, दादा शब्बीर मोहम्मद खान, दादा यासीन खान, दादा रफत आलम और दादा हशमत आलम ने राजस्थान सरकार में अपने-अपने क्षेत्रों में निष्ठा और मेहनत के साथ उल्लेखनीय सेवा दी।

विशेष रूप से दादा शब्बीर मोहम्मद खान साहब ने राजस्थान शासन सचिवालय में उप शासन सचिव के पद से अपनी सेवा पूरी की और अपनी सादगी, ईमानदारी और पराक्रम के लिए अपार ख्याति अर्जित की। उन्हें राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय भैरोंसिंह शेखावत, स्वर्गीय हरदेव जोशी, शिवचरण माथुर, अशोक गहलोत और माननीय वसुंधरा राजे सिंधिया द्वारा उनके उत्कृष्ट योगदान और प्रशासनिक कौशल के लिए विशेष सम्मान से नवाज़ा गया।

दादा नसीब खान जी के पोते दादा शोकत आलम वर्तमान में जयपुर के प्रतिष्ठित फौजदारी वकील के रूप में जाने जाते हैं।

चौमू के हवेली वाले नागड पठानों की वंशावली

चौमू के हवेली वाले नागड पठानों की वंशावली निम्न अनुसार है **:-** नवाब इस्माइल खान दलेर जंग के पुत्र हुए नवाब जिन्दा पीर मलिक दिलावर खान, जिन्दा पीर मलिक दिलावर के पुत्र हुए अव्दाल ख़ान,अव्दाल ख़ान के पुत्र हुए नत्थू ख़ान, नत्थू ख़ान के पुत्र हुए ओलिया ख़ान,ओलिया ख़ान के पुत्र हुए लन्खार ख़ान, लन्खार ख़ान के पुत्र हुए लाल खिज्र ख़ान,लाल खिज्र ख़ान के पुत्र हुए दौलत ख़ान,दौलत ख़ान के पुत्र हुए भादर ख़ान,भादर ख़ान के पुत्र हुए फिरोज खान, फिरोज खान के पुत्र हुए अलादिल ख़ान,अलादिल ख़ान के पुत्र हुए बहलोल ख़ान,बहलोल ख़ान के पुत्र हुए सिकन्दर ख़ान, सिकन्दर ख़ान के पुत्र हुए मेहराब ख़ान, मेहराब ख़ान के तीन पुत्र हुए **(1)** दराब ख़ान **(2)**बहलोल ख़ान **(3)** साहब ख़ान दराब ख़ान ने अपने छोटे भाई बहलोल ख़ान को गोद ले लिया था

साहब ख़ान के पुत्र हुए मिश्री ख़ान,मिश्री ख़ान के पांच पुत्र हुए **(1)**तालू ख़ान जोकि चौमू दरबार के फौजदारी मामलों को देखते थे इनकी ही नस्ल से मैं हूं **(2)**होशदार ख़ान **(3)**माले ख़ान **(4)**दायम ख़ान **(5)** दाऊद ख़ान

साहब ख़ान के भाई बहलोल ख़ान के तीन बेटे हुए **(1)**शेर ख़ान **(2)**करम ख़ान **(3)** इख्तियार ख़ान

शेर ख़ान पाटन के युद्ध में मराठों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए,करम ख़ान चौमू दरबार की फौज के कप्तान थे इनके बेटे उम्रदराज ख़ान हुए, उम्रदराज ख़ान के दो बेटे हुए **(1)**बहलोल ख़ान**(**स्वतन्त्रता सेनानी**)(2)**जन्ग बहादुर ख़ान

दादा तालू खान के वंशज

तालू खान जी के बेटे हुए नसीब खान जी जिन्हें अल्लाह **4** बेटे अता किये महबूब खान, अब्दुल रहमान खान,आलमशेर खान और अब्दुल समद खान। नसीब खान जी के बेटे महबूब खान जी के **3** बेटे हुए हाजी करम खान, अल्लाह बेली खान और दादा शब्बीर मोहम्मद खान। नसीब खान जी के दूसरे बेटे अब्दुल रहमान खान जी के **3** बेटे हुए शमशीर खान, महराब खान, यासीन खान। नसीब खान जी के तीसरे बेटे आलमशेर खान जी की **3** बेटी और **4** बेटे हुए राहत आलम,रफतआलम,शोकतआलम,हशमत आलम।नसीब खान जी के चौथे बेटे अब्दुल समद खान जी के **2** बेटे हुए शमशीर खान और बग बहादुर खान।नसीब खान जी के बेटे महबूब खान जी के तीन बेटों में से हाजी करम खान जी की **2** बेटीयां और **1** बेटे अली हसन जी हुए जिनका युवावस्था में ही इन्तेकाल हो गया था। महबूब खान के दूसरे बेटे अल्लाह बेली खान जी के **3** बेटी और **2** बेटे अय्यूब खान और आरिफ खान हुए।

महबूब खान जी के तीसरे बेटे दादा शब्बीर मोहम्मद खान जी को अल्लाह ने **2** बेटी और **2** बेटे उस्मान मोहम्मद खान और सुलेमान मोहम्मद खान अता किए।दादा शब्बीर मोहम्मद खान जी के बड़े बेटे उस्मान मोहम्मद खान के **2** बेटे इरफान मोहम्मद खान और रेहान मोहम्मद खान हुए। दादा शब्बीर मोहम्मद खान के छोटे बेटे सुलेमान मोहम्मद खान की **1** बेटी फातिमा खान हुई ।

मेरी सीधी वंशावली

→ नवाब इस्माइल ख़ान दलेर जंग
→ नवाब जिन्दा पीर मलिक
दिलावर ख़ान
→ अव्दाल ख़ान
→ नत्थू ख़ान
→ ओलिया ख़ान
→ लन्खार ख़ान
→ लाल खिज्र ख़ान
→ दौलत ख़ान
→ भादर ख़ान
→ फिरोज ख़ान
→ अलादिल ख़ान
→ बहलोल ख़ान
→ सिकन्दर ख़ान
→ मेहराब ख़ान
→ साहब ख़ान
→ मिश्री ख़ान
→ तालू ख़ान
→ नसीब ख़ान
→ महेबूब ख़ान
→ शब्बीर मोहम्मद ख़ान
→ उस्मान मोहम्मद ख़ान
→ इरफ़ान मोहम्मद ख़ान
और रेहान मोहम्मद ख़ान

REFERENCES 1.Taken from
According to a glossary of the tribes and castes of the Punjab and North-West Volume 1 by H.A Rose, IBBETSON, Maclagon.

2. Taken from Wikipedia, the free encyclopedia. Topic -Nathawat.

3. Nathawton Ka Itihas written by Hanuman Sharma. Published in 1937.

Page 8.

4. Nathawton Ka Itihas

written by Hanuman Sharma.

Published in 1937. Page 192.

5. Taken From Saulat e Afgani By Muhammad Zardar Khan Naghar.

6. Taken from Wikipedia, the free encyclopedia. Topic -Narhar.

7. Taken from our Family legends and documents.

This information was collected by Rehan Muhammad Khan in the Presence of Adv. Usman Mohammed Khan